॥ ओ३म् ॥

प्रभु से विनय

हे देव! हे सखा! हे मित्र! तू इस संसाररूपी राष्ट्र का स्वामी है। इस राष्ट्र को शान्तिदायक, महान और ऊँचा बना। विधाता! यही नहीं हम संसाररूपी राष्ट्र को ऊँचा बनाना चाहते हैं। हम सबसे पूर्व चाहते हैं कि यह हमारा हृदयरूपी राष्ट्र है यह हर प्रकार से ऊँचा बना रहे। यह हमारी हृदयरूपी जो अयोध्या है इसमें वह राम विराजमान रहे जिस रामराज्य के ऊपर संसार व्याकुल होता चला जा रहा है। हे विधाता! आज हम शरीर को वह अयोध्या चाहते हैं जिसमें रामराज्य हो जाए। हमारी यह अयोध्यारूपी नगरी ऊँची बन जाए और वह विधाता इस नगरी में ओत-प्रोत हो जाए। वह विधाता इस राष्ट्र का स्वामी बन जाए।

हे विधाता! आज हम उस राष्ट्र को ऊँचा बनाना चाहते हैं। जिस राष्ट्र में हमारा जन्म हो जो राष्ट्र देखो, हमारे शरीर का एक ऊँचा भाग हो। कैसे बनाएँगे? जब तक आपकी करुणा नहीं होगी आपकी दी हुई प्रेरणा हमें नहीं मिलेगी। तब तक देखो हम इस संसार का अपने शरीररूपी राष्ट्र का उत्थान किसी भी प्रकार नहीं कर सकते न ही इसका निर्माण अच्छी प्रकार कर सकते हैं।

प्रभु! हम अपना ही कल्याण नहीं चाहते, संसार का कल्याण चाहते हैं। जब संसार में रहने वाले प्राणियों का हृदय अयोध्या के तुल्य बन जाए। रामराज्य सबके हृदय में रमण कर जाए। उस काल में मुनिवरों देखो, शान्ति का प्रदर्शन हो जाएगा।

विधाता! आज हम भी अपना प्रदर्शन कर रहे हैं। हम भी अशान्ति में हैं हमें शान्ति नहीं मिल रही हैं। परंतु मनुष्य को अपनी मर्यादा कदापि भी शान्त नहीं करनी चाहिए। यह मर्यादा वह पदार्थ है जिसको त्यागने से यह संसार अशान्ति को प्राप्त हो जाता है। यह मर्यादा में चलता है तो उस समय शान्ति को ग्रहण करने वाला बन जाता है। जैसे मुनिवरो! अग्नि मर्यादा में रहती है तब तक वह संसार के लिए लाभदायक होती है, और जब मानव अग्नि को मर्यादा से पृथक् कर देता है तो उसी काल में वह संसार का विनाश करने वाली बन जाती है।

पूज्यपाद-गुरुदेव

अंक : 535 कुल पृष्ठ संख्या समग्र अंक : 610
वर्ष : 45 44 समग्र वर्ष : 51

अनुक्रम

क्रम संख्या	विषय	पृष्ठ संख्या
1. प्रभु से विनय	पूज्यपाद-गुरुदेव	3
2. अनुक्रम		4
3. सृष्टि विज्ञान एक यज्ञ	पूज्यपाद-गुरुदेव	5-20
4. त्रिगुणात्मक सृष्टि सत्यमय	पूज्यपाद-गुरुदेव	21-34
5. ऋषियों के उद्‌गार		35
6. दान, पुस्तकों की सूची व पुस्तक प्राप्ति के स्थान तथा सूचना इत्यादि		36-42

सूचना

सभी आजीवन/वार्षिक सदस्यों को 'यौगिक प्रवचन' पत्रिका प्रत्येक मास की 10/11 तारीख को प्रेषित की जाती है। किसी भी सदस्य को पत्रिका प्राप्त न होने की स्थिति में अपने पोस्ट मैन से एक सप्ताह के समय में जानकारी करें और फिर भी न मिलने की स्थिति में अपने सम्बन्धित पोस्ट ऑफिस में इस विषय में लिखित एक प्रार्थना-पत्र पोस्ट मास्टर साहब को दें जिससे कि पत्रिका न मिलने की खोज-बीन डाक विभाग द्वारा कराके आपकी पत्रिका आपको समय पर मिलनी प्रारम्भ हो जाए। कृपया प्रार्थना-पत्र की एक प्रति पर डाक विभाग द्वारा प्राप्ति के हस्ताक्षर व मोहर लगवाकर हमें भी भेज देवें जिससे कि इस विषय में यहाँ भी डाक विभाग को अवगत करा दिया जाए।

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)

आप सभी को नव-वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएँ।

।। ओ३म् ।।

सृष्टि विज्ञान एक यज्ञ

जीते रहो!

देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद वाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेद वाणी में उस मेरे देव की महिमा का गुणगान गाया जाता है, क्योंकि जितना भी यह जड़ जगत् अथवा चेतन्य जगत् हमें दृष्टिपात आ रहा है उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में प्रायः वह मेरा देव दृष्टिपात आ रहा है। प्रत्येक वेद मन्त्र उस परमपिता परमात्मा की महती का वर्णन कर रहा है क्योंकि वह परमपिता परमात्मा अनुपम है, वह विज्ञानमय स्वरूप माने गए हैं। प्रत्येक मानव परम्परागतों से ही विज्ञान की वार्त्ताओं में रत्त होता चला आया है। वह आध्यात्मिक विज्ञान हो, चाहे वह भौतिक विज्ञान हो, परन्तु वह जो परमपिता परमात्मा जो विज्ञानमयी स्वरूप माने गए हैं, उसकी प्रतिभा का वर्णन हमारे प्रायः वैदिक साहित्य में आता रहता है। **'वेदाः अमृतं'** वह वेद अमृत है जिसको पान करने से मानव अमरावती को प्राप्त हो जाता है और वह अपनी आभा में रत्त हो करके अपनी मानवीयता का दिग्दर्शन करता है।

आत्मा की पिपासा

मैं विशेष विवेचना तो तुम्हें देने नहीं आया हूँ, विचार केवल यह कि विज्ञान की चर्चाएँ हमारे यहाँ प्रायः होती रहती हैं। जैसे परमपिता परमात्मा विज्ञानमयी स्वरूप हैं **आज तक जितना भी विज्ञान मानवीय मस्तिष्कों में नृत्य करता रहा है वह विज्ञान उस परमपिता परमात्मा की धरोहर है।** वह परमपिता परमात्मा की कृतिका है जिसको मानव

जानने के लिए सदैव उत्सुक रहता है क्योंकि जैसे माता और पुत्र का दोनों का समन्वय है, माता के गुणों को पुत्र अपने में धारण करना चाहता है, पिता के गुणों को पुत्र अपने में धारण करना चाहता है। आचार्य के गुणों को ब्रह्मचारी अपने में ग्रहण करना चाहता है। अपनी आचार सँहिता का निर्माण करना चाहता है। इसी प्रकार प्रत्येक वेद मन्त्र उस परमपिता परमात्मा की महती का अथवा उसके विज्ञान की प्रायः चर्चा करता रहता है और जितना विज्ञान वैज्ञानिक मानव आत्मा की पिपासा है और आत्मा यह चाहता है कि मैं उस परमपिता परमात्मा को, अपने जीवन के ज्ञान और विज्ञान को मैं जानता चला जाऊँ और उसमें वैज्ञानिक बनता चला जाऊँ क्योंकि वह उस पुत्र जो आत्मा है उसके पिता की धरोहर वह विज्ञान है। यह विज्ञानमयी स्वरूप होने से उसकी महती को यह अन्तरात्मा देखो कहीं बाह्य जगत् में विज्ञान में रत्त होना चाहता है। कहीं वह अन्तर्मुखी हो करके आत्म-विज्ञान में प्रवेश होना चाहता है। जिस भी आभा में वह रमण करता है उसी आभा में विज्ञान को उस परमपिता परमात्मा के गुणों को अपने में लाना चाहता है। तो वह कैसा मेरा प्यारा प्रभु विज्ञानमयी स्वरूप है। उसकी उग्र ही उस परमपिता परमात्मा की उग्रता में ही सर्वत्र विज्ञान और ज्ञान निहित रहता है।

ज्ञान और विज्ञान की चर्चाएँ मेरे पुत्रो! मैने कई काल में तुम्हें प्रकट कीं। आज मैं विशेष आभाओं में जाना नहीं चाहता हूँ। आओ, तुम्हें मैं वहीं ले जाना चाहता हूँ जहाँ काकभुषण्ड जी की चर्चाएँ, महर्षि लोमश मुनि की चर्चाएँ और महाराजा हनुमान अनुष्ठान करते रहते थे। अपने में अनुष्ठान करना बड़ा प्रियतम है। आज कोई भी मानव परमपिता परमात्मा के निकट जाना चाहता है या चित्त के मण्डल में प्रवेश करना चाहता है या मानव उदान प्राण को ले करके आत्मतत्त्वों को जानना चाहता है। जो जब तक नहीं जानेगा, तब तक परमपिता परमात्मा आश्रय नहीं देगा क्योंकि परमपिता परमात्मा का आश्रय लेना

बहुत अनिवार्य है क्योंकि वह विज्ञानमयी, ज्ञानमयी, योगमयी, उसमें वह स्वरूप माने गए, स्वतः अपने स्वरूप में रहने वाला है। इसी प्रकार मानव को अपनी मानवीयता के ऊपर विचार-विनिमय करते हुए मानव-विज्ञान की धाराओं में महानता की ज्योति में वह रत्त रहने के लिए मेरे उस देव ममत्व को धारण करने वाला प्रभु जो विष्णु है। पालन करने वाला है, पालना करता रहता है। हम उस इतिहास में खो जाएँ और उस आश्रुति बिना हम आध्यात्मिक ज्ञान को नहीं जान सकते, भौतिक विज्ञान में पूर्णरूपेण नहीं बन पाते।

महर्षि काकभुषण्ड जी महाराजा हनुमान के प्रश्नोत्तर

मेरे प्यारे! देखो एक समय महाराजा हनुमान ने यह प्रश्न महर्षि काकभुषण्ड जी से किया था किसी काल में। उन्होंने कहा था, हे प्रभु! मैं विज्ञानमयी होना चाहता हूँ। जब मैं बाल्यकाल में ऋषियों के द्वारा अध्ययन करता रहा तो मुझे बहुत-सी विद्याओं का उन्होंने प्रतिपादन कराया है। उन विद्याओं में मैंने रत्त रहने का अपने बहुत से सङ्कल्प किए हैं। अपनी धाराओं को जानने के लिए मैंने नाना प्रकार की प्रतिभा, आनन्दमय विज्ञान और यौगिकता में प्रवेश होने के लिए मैं तत्पर रहा हूँ। तो काकभुषण्ड जी ने कहा कि तुम क्या जानना चाहते हो? उन्होंने कहा, प्रभु मैं यह जानना चाहता हूँ कि यह जो आध्यात्मिक विज्ञान और भौतिक विज्ञान प्रायः वैदिक साहित्य में आता रहता है, वैदिक साहित्य हमें उसको अग्रणीय बनाता रहता है, उस वैदिक साहित्य में हम प्रवेश होना चाहते हैं, जिससे मानवीयता हमारे समीप आती हुई हम विज्ञान की प्रतिभा में रत्त हो जाएँ और राष्ट्र और समाज कल्याण में रत्त हो जाएँ। जब हनुमान जी ने ऐसा कहा तो काकभुषण्ड जी ने कहा कि तुम यौगिक आध्यात्मिक विज्ञान में रत्त रहना चाहते हो या भौतिक विज्ञान में जाना चाहते हो? उन्होंने कहा, मैं दोनों प्रकार के विज्ञान की प्रतिभा को जानना चाहता हूँ। आज भौतिक विज्ञान क्या

है, आध्यात्मिकवाद क्या है? आध्यात्मिक विज्ञान क्या चाहता है, भौतिक विज्ञान क्या चाहता है।

भौतिक विज्ञान

उन्होंने जब यह वाक् कहा तो काकभुषण्ड जी की प्रतिभा उनके वचनामृतों को पान करने लगे। उन्होंने कहा, हे हनुमन्तमय्! यह जो 'स्वाति ब्रह्मवाचो देवो ब्रह्मा।' यदि तुम चाहते हो कि मैं इसका निर्णय करूँ, भौतिक विज्ञान वह है जिसमें अणु और परमाणुओं में जो गतियाँ हो रही हैं, अणु और परमाणु में जो प्रतिभासिकता हो रही है उन अणु और परमाणुओं को जान करके नाना प्रकार के यन्त्रवाद में प्रवेश होना है और परमाणुवाद में एक प्रतिभा का दिग्दर्शन करते हुए अपने में वह विज्ञान एक अद्भुत कहलाता है। एक परमाणु की तरङ्गें जानीं, दूसरे परमाणु की तरङ्गें एकत्रित हो जाती हैं। जिससे तरङ्ग को जाना तो तरङ्गों का जन्म हो जाता है। तो वह इतना सूक्ष्म विषय है, वह इतना सूक्ष्म क्रियाकलाप कि एक को जान दूसरे उपस्थितियों को मार्ग नहीं प्राप्त होता।

अन्त में उसका समिधा अन्त हो जाता है तो उस विज्ञान को मुनिवरो! देखो, वायुमण्डल में अपनी आभा के साथ चला जाता है, परन्तु देखो वह विज्ञान जन्म-जन्मान्तर व्यतीत हो जाते हैं। जन्म-जन्मान्तर उसके चले जाते हैं अन्त में विज्ञानमय भौमार्य जगत् में वह वैज्ञानिक जगत में अपने को सफल स्वीकार नहीं करता, क्योंकि उसको सफलता नहीं प्राप्त होती। एक परमाणु और दूसरे परमाणु में मिलान और सङ्गतिकरण की भावना वह उसमें रत्त कर देते हैं।

आध्यात्मिक विज्ञान

उन्होंने कहा, हे हनुमान और द्वितीय यह है कि एक हम यह आध्यात्मिक विज्ञान कहते हैं। आध्यात्मिक विज्ञान क्या है? जब योगी

यौगिकवाद में प्रवेश करता है, जब वह शान्त मुद्रा में मुद्रित होता है, मुद्रित हो करके वह प्राण का प्राण को अपने में दृष्टिपात करता है। प्राण के ऊपर ध्यानावस्थित होता है, मन की प्रतिभा को वहाँ ले जाता है। ज्ञान-इन्द्रियाँ प्राणों के ऊपर एक-दूसरे में समावेश में लग जाता है।

मुझे स्मरण आता रहता है काकभुषण्ड जी ने कहा कि एक समय हम भ्रमण करते महर्षि च्यवन ऋषि के द्वार पर पहुँचे। **महर्षि च्यवन मुनि देखो वह अनुष्ठान कर रहे थे।** वह यह चहाते थे कि मेरी आयु दीर्घ हो, कायाकल्प के सम्बन्ध में अश्विनी कुमारों की सहायता ले करके नाना प्रकार का अपने में अनुष्ठान कर रहे थे और विचार रहे थे मेरा यह शरीर बहुत बलिष्ठ और युवा होना चाहिए। वह उसी कल्पना में लगे हुए, अहा जब वे योगाभ्यास में परणित होते, यौगिक क्षेत्रों में जब च्यवन ऋषि प्रवेश कर जाते, तो उसे नाना प्रकार परमाणु अपने में भरण दृष्टिपात हो रहे थे। काकभुषण्ड जी ने कहा तो भगवन्! हमनें महर्षि च्यवन से यह प्रश्न किया कि तुम कैसे यौगिकवाद में कैसे इसके क्रिया में संलग्न हो? उन्होंने कहा मैं प्राण को प्राण में, प्राण को अपान में और अपान को प्राण में और प्राण को समान में और समान को व्यान में और व्यान को उदान में और उदान को नाग में, नाग को कूर्म में, कूर्म को देवदत्त में, देवदत्त को धनञ्जय में, धनञ्जय को कृक्कल में, मैं दस प्राणों को एक प्राण सूत्र में पिरोना चाहता हूँ और वह प्राणसूत्र में कैसे पिरोये जाते हैं, जैसे मैंने पुनः वार्ता प्रकट की नाग कूर्म देवदत्त धनञ्जय कृक्कल यह जो प्राण हैं पञ्च महा प्राणों में समावेश हो जाते हैं।

जब योगेश्वर समाधि के पिपात में प्रवेश करता है ध्यानावस्थित हो जाता है तो वह एक-दूसरे प्राण में एक दूसरी इन्द्रियों में इनका सङ्गतिकरण हो जाता है और इनका जब सङ्गतिकरण होता है उस सङ्गतिकरण का अभिप्राय यह होता है वही देखो मुनिवरो! सङ्गतिकरण करते-करते योगेश्वर अपने में अनुष्ठान करता है। बारह-बारह वर्षों के अनुष्ठान प्राण को अपान में लगाने में लगा रहता है योगी। उनकी आयु

भी दीर्घ बनती रहती है। विचार आता रहता है कि इस समय वह चित्त के मण्डल को भी त्याग देता है। वह मोक्ष की प्रतिभा में रत्त हो जाता है। तो वह प्रभु के आनन्द में आनन्दित होता हुआ सत्चित आनन्द की प्रतिभा में रत्त हो जाता है।

मेरे प्यारे! विचार क्या? महर्षि काकभुषण्ड जी ने कहा कि तुम सबसे प्रथम प्राण का निरोध करो। प्राण का सङ्गतिकरण अपान के साथ में किया जाये। मूलाधार में उसको किया जाता है। जब इसकी ही प्रतिभा एक महानता की ज्योति बन करके अपने में रत्त रहने के लिए तत्पर हो जाती है तो अपनी महानता आभा में युक्त होते हुए अपने में धारा का प्रतिपादन, आभा में रत्त हो जाता है। तो आज का विचार हमारा क्या कह रहा है कि हम परमपिता परमात्मा की महती का वर्णन करते हुए, महती को जानते हुए अपने में, आभा में रत्त रहना चाहते हैं। हम परमपिता परमात्मा की महती में आनन्द को प्राप्त करते चले जायें। तो महाराजा हनुमान ने कहा, प्रभु यह मैंने वाक् कई काल में श्रवण किया है। कई काल में इस आभा को प्रायः लाता रहा हूँ। जिसके ऊपर हम सदैव तत्पर रहे हैं।

महात्मा काकभुषण्ड जी ने कहा कि हमें यह च्यवन ऋषि ने यह वाक् प्रकट कराया, तो हम भी अपने में अनुष्ठान करने लगे। जब अनुष्ठान में परणित हो गए, अनुष्ठान करने लगे तो उसी अनुष्ठान वेला में परणित हो करके अपनी मानवीयता को अपने यौगिकवाद में, आध्यात्मिकवाद में प्रवेश कर गए। **आध्यात्मिक विज्ञान एक ईश्वरीय विज्ञान है जो अपने को बाह्य जगत् से उसका कोई समन्वय नहीं है।** वे केवल आन्तरिक जगत से ही उसका सङ्गतिकरण किया जाता है। आध्यात्मिकवाद आन्तरिक जगत् से जाना जाता है।

दोनों विज्ञान का अन्तिम चरण

ये जो भौतिक विज्ञान है ये भौतिक विज्ञान वैज्ञानिक बाह्य जगत्

से जानना चाहता है और बाह्य जगत का जो विज्ञान है उसमें कोई वैज्ञानिक आज तक पूर्ण सफलता को प्राप्त नहीं हुआ। किसी ने परमाणु से किसी अङ्ग को जाना है कि कोई काल ऐसा हुआ अभी तक नहीं जाना है उसी में देखो भौतिक चमत्कार भौतिक आभामयी विज्ञान रत्त हो गया है। अन्त में उसका राष्ट्रीयकरण हो जाता है। अन्त परिणाम यह होता है कि राष्ट्रीयकरण होते ही राष्ट्र में सङ्गाम के अवशेष बन जाते हैं। उस सङ्गाम के अवशेष करके ही मानव का ह्रास हो जाता है। वह भौतिक विज्ञान रसातल को चला जाता है। फिर पुनः से उसका उत्थान होता है।

ये तो देखो बाह्य जगत् का भौतिक विज्ञान रहा, परन्तु आध्यात्मिक विज्ञान वेला जब अन्तःआत्मा से इस विज्ञान को बाह्य जगत् का अनुसन्धान आन्तरिक जगत् में कर रहा है। बाह्य ब्रह्माण्ड को अपने अन्तर्हृदय में दृष्टिपात कर रहा है। पृथ्वी के विज्ञान को अपने ही परमाणु पार्थिव तत्त्वों में अन्वेषण कर रहा है। वह विज्ञान से इन इन्द्रियों पर प्राणों से विजय करता हुआ दसों प्राणों वाले इस भवन को जानकर के 'प्राणायाम् भविते देवाय सत प्रमाण वृही लोकाम्'। अन्तरात्मा अपने तथा प्रभु जो विज्ञानमयी स्वरूप है, जो ब्रह्माण्ड को रचता है वह उसके आनन्द में रत्त हो जाता है।

आज मैं तुम्हें विशेषता में ले जाना नहीं चाहता हूँ। मैं कोई व्याख्याता नहीं हूँ। केवल तुम्हें संक्षिप्त परिचय देने चला आया हूँ और वह परिचय यह है कि मुनिवरो! देखो, वह जो मेरे देव हैं, जो विज्ञानमयी स्वरूप माना गया है, जो विज्ञान का पुञ्ज कहलाता है, जो विज्ञान में रत्त रहने वाला है। जब वैज्ञानिक इस परमपिता परमात्मा को अपना साथी बना लेता है, अपना मित्र बना लेता है, उसको स्वीकार करता है, मन को उसी धारा में परणित कर देता है। वह योगेश्वर अपनी आभा में परणित हो जाता है। काकभुषण्ड जी ने यह वाक् कहा तो

काकभुषण्ड जी के यह वाक्य पा करके महाराजा हनुमान ने कहा, प्रभु हमें आज्ञा दीजिए। मैने आपसे बहुत कुछ प्राप्त किया है।

महाराजा गणेश महाराजा हनुमान का अनुसन्धान

काकभुषण्ड जी के वाक्यों को ले करके भ्रमण करते हुए वह पुनः कैलाश के आँगन में प्रवेश कर गए। महाराजा गणेश जी के द्वार पर पहुँचे। महाराजा गणेश जी ने कहा, आइए मित्रोभव! अब क्योंकि महाराजा हनुमान और गणेश जी की विज्ञानशाला समुद्रों के तट पर थी, वे अन्वेषण करते रहते थे तरङ्गों के ऊपर, तरङ्गों को तरङ्गित करते रहते थे। सूर्य की किरण जो पृथ्वी में स्वर्ण की मात्रा को जन्म दे रही हैं, उन किरणों को अपने में आभासित करते थे। महाराजा हनुमान और गणेश जी दोनों योगाभ्यास भी करते थे, योग में परणित भी रहते और भौतिक विज्ञान को भी जानने का प्रयास करते। आध्यात्मिकवाद में भी रत्त रहते।

महाराजा गणेश जी के सम्बन्ध में तो यह आया है कि क्या सूर्य की किरणों के साथ में वह सूर्य लोक की यात्रा करते रहते थे। महाराजा हनुमान, अहा जब सूर्य विद्या को निगलते रहते थे कि कौन-कौन-सी विद्या सूर्य की किरण जब पृथ्वी पर आती है, कोई पृथ्वी के गर्भ में स्वर्ण का निर्माण कर रही है। कहीं रत्नों का निर्माण हो रहा है, कहीं जल को शक्तिशाली बनाया जा रहा है। एक नवीन ब्रह्माण्ड उनके समीप आ जाता है। जब नवीन ब्रह्माण्ड आ जाता है तो उन किरणों को अपने में सिञ्चन करना प्रारम्भ कर उन किरणों के ऊपर अनुसन्धान करना, अनुसन्धानशाला में उन किरणों को लाना। यन्त्रों का निर्माण करना। उन किरणों को जानना जो किरण इस पृथ्वी के गर्भ में, माता वसुन्धरा के गर्भ में जो नाना प्रकार का जो विज्ञान जो धारा में रत्त हो रहा है। आभा में नृत्य हो रहा है, आभा से युक्त होता हुआ वह ऊर्ध्वा में गति वाला मुनिवरो! देखो, बन करके, आभा में रत्त रहने वाला है।

हे मेरी माँ वसुन्धरा! तेरे गर्भ में क्या नहीं है। यह मानव सब तेरे ही गर्भ में वशीभूत हो रहा है। तू अपने गर्भ से नाना प्रकार का खनिज और खाद्य दे-दे करके मानव के जीवन को ऊँचा बना रही है। हे माँ! तेरे गर्भ में कौन-सी वस्तु नहीं है, तू कैसी पवित्र माँ है! ये जो संसार तेरे गर्भ में वशीभूत हो रहा है और माँ तेरे से सहायता पा रहा है। नाना प्रकार की सहायता पा रहा है। जो सहायतावश है वही तो तेरा विज्ञान है, महानता की ज्योति पर ले जाता है।

मैंने बहुत पुरातन काल में तुम्हें निर्णय देते हुए कहा था, महाराजा हनुमान और गणेश जी दोनों समुद्र के तट पर जहाँ सूर्य की किरणों का आदान-प्रदान दृष्टिपात करते रहते थे। सूर्य की किरणों का आदान-प्रदान हो रहा है, एक ही पृथ्वी की आभा किरणों में एक किरण आई वह स्वर्ण की मात्रा दे रही है, द्वितीय किरण का आदान हुआ तो वह अन्य धातु उसी धातु में दूसरी धातु का मिश्रण हो रहा है। उन नाना प्रकार की किरणों को सिञ्चन करने वाले वैज्ञानिक अपने विज्ञान में रत्त रहे हैं। विज्ञान को जानते हुए इस आभा में नियुक्त होते हुए, परमपिता परमात्मा को अपना साक्षी बना दें।

सार्थक विज्ञान

विचार-विनिमय क्या? नाना प्रकार के यन्त्रों का जन्म होना यह एक आश्चर्य नहीं है। परन्तु यन्त्र का सदुपयोग करना उस यन्त्र को आभा में नियुक्त करना, वही यन्त्र राष्ट्र में सार्थक बन करके मानवीय जीवन की धारा और महानता की ज्योति को जन्म देने वाला है। वही तो महानता की ज्योति आती है। और जब विज्ञान के दुरुपयोग का प्रतिपादन होता है तो विज्ञान में सँकीर्ण समाज बन जाता है, सँकीर्ण समाज बन करके राष्ट्रों में पुनः से अग्नि प्रदीप्त हो जाती है। उस अग्नि को कोई शान्त नहीं कर सकता। जब तक विज्ञान का दुरुपयोग रहेगा, जब तक विज्ञान में सार्थकता नहीं आती, आध्यात्मिकवाद नहीं आता।

आध्यात्मिकवादी क्या कहता है! आध्यात्मिक विज्ञानवेत्ता यह कहता है कि हे मानव, तू अपनेपन को जान करके तू परमात्मा में एक रस हो जा। परमात्मा में एक रस होगा तो तेरे जीवन से जब तक तू उसके मार्ग में गति करेगा तेरी उस गति से सहस्त्र प्राणी गतिवान हो जायेंगे और सहस्त्रों प्राणी गतिवान हो करके योग की प्रतिभा में रत्त रह करके और आध्यात्मिकवाद में प्रवेश करके भौतिक विज्ञान अपने में समावेश करके, भौतिक विज्ञान आध्यात्मिकवाद का, दोनों का समन्वय हो जाता है।

जब तक मुनिवरो! देखो, यह समन्वय नहीं होता, तब तक मानव की जीवन की धारा और राष्ट्र की धारा, समाज की धारा, सँकीर्णता की धारा का परिवर्तन तब तक नहीं होगा जब तक विज्ञान और योग का दोनों का समन्वय नहीं हो जायेगा, दोनों का सङ्गतिकरण नहीं होगा, तो कल्याण नहीं होगा।

महाराजा हनुमान ओर गणेश जी का विज्ञान

आज मैंने बहुत पुरातन काल में तुम्हें ये चर्चाएँ पुनः से प्रकट की हैं। महाराजा हनुमान और गणेश जी दोनों इस विज्ञान में रत्त रहते थे कि हम वैज्ञानिक यन्त्रों का निर्माण करें, तो वे ऐसे-ऐसे यन्त्रों का निर्माण करते रहते थे जिन यन्त्रों में विद्यमान हो करके पृथ्वी की और चन्द्रमा की जहाँ सीमा प्रारम्भ हो जाती है वहाँ अपने यन्त्रों की यन्त्रशाला और वहीं एक निर्माण प्रही आभा में यन्त्र को स्थिर कर देते थे। उस पर विद्यमान हो करके वायु का सञ्चय करना पृथ्वी के परमाणुओं को ले करके वह यन्त्रों का निर्माण करके दूसरे लोकों में लोकों के लिए विज्ञान में रत्त हो जाते थे। सूर्य की किरण कहीं से यन्त्र गति करने वाला जो सूर्य की यात्रा करने वाला प्राणी होता है, उसकी परिक्रमा करता रहता है। तो मैं विशेष चर्चाएँ तुम्हें प्रकट करने नहीं आया हूँ, केवल परिचय यह हमारा कि मुनिवरो! देखो यही विज्ञान, हनुमान के जीवन में एक विज्ञान हमें प्राप्त होता है।

मेरे प्यारे! महानन्द जी ने मुझे कई काल में यह प्रकट कराया है, 'विज्ञानां भविते देवाम्!' 'ऐसे-ऐसे यन्त्र थे समुद्रों पर वह गति कर रहा है, समुद्रों में प्रवेश नहीं हो रहा है, यन्त्र जिसमें विद्यमान हो करके अग्नि प्रदीप्त करके यन्त्र में देखो जो लंका को, रावण की लंका को विध्वंस कर सकती है। वह सब यन्त्र उसके आभा में नियुक्त रहते थे। तो परिणाम क्या? आज मैं विशेषता नहीं विचार केवल यह देने के लिए आया हूँ कि मुनिवरो! देखो विज्ञान की नाना प्रकार की धाराएँ मानव के जीवन में हैं। ऐसा-ऐसा परमाणुवाद अन्तरिक्ष में विद्यमान है। यदि हम देखें उस सूक्ष्म से एक-एक अणु एक परमाणु को एकत्रित करने, उन्हीं परमाणुओं के ऊपर कई सौ वर्षों तक प्रकाश की धाराएँ उत्पन्न होती रहती हैं। प्रकाश की धाराओं में मानव रत्त होता रहा है। तो वे छः माह तक दोनों विज्ञान में रत्त रहते थे।

छः माह के पश्चात् महाराजा शिव के आश्रम में प्रवेश करके योगी का आचार्य शिक्षा को अध्ययन करते और देखो कुछ समय वह ऋषि-मुनियों में रत्त रह करके आध्यात्मिकवाद में आत्मा कैसे जाना जाए; प्राण का हम कैसे श्रोत करें, प्राण को हम कैसे स्वीकार करें।

वह दोनों याग भी करते थे, याग का अभिप्राय यह है याग करना। यह मानव की प्रतिभा का एक अङ्ग बना हुआ है। परम्परागतों से सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर करके जब तक यह पृथ्वी, यह मानव सृष्टि का काल चलता रहेगा, जब तक मुनिवरो! देखो एक धारा का जन्म होता रहेगा। एक धारा अपने में धारित होती हुई वह याग एक मानव का अङ्ग बना हुआ है, मानव का एक व्यवहार उक्तियों में रत्त रहने वाला है।

याग का अभिप्राय क्या है? मैंने कई काल में तुम्हें वर्णन करते हुए कहा था। एक समय महाराजा हनुमान और महाराजा गणेश जी दोनों अपने समुद्र के तट पर याग कर रहे थे। उनकी विज्ञानशाला थी। उसमें एक यज्ञशाला थी, यज्ञशाला में याग कर रहे थे। अहा! जो शब्द

उच्चारण करते, शब्दों में जो चित्र आते रहे, वह चित्रवलियों में दृष्टिपात करते रहते थे। हमारे शब्द के साथ में एक-एक चित्र बन करके अन्तरिक्ष में गति करता रहता है। अन्तरिक्ष में रत्त होता रहा है। वह अपना क्रियाकलाप भी करता रहता है, वह याग के चित्र द्यौ लोक में प्रवेश कर जाते हैं। दोनों याग कर रहे थे, याग करते-करते एक सुदेतुकेतु नाम के ब्रह्मचारी वहाँ आ गए। सुदेतुकेतु उस यज्ञ में विराजमान हो गए, वे पवित्र थे, ब्रह्मचरिष्यामि थे। जब वे याग करने लगे इतने में मुनिवरो! देखो महर्षि अटूटी मुनि महाराज वहाँ विराजमान हो गए। महर्षि अटूटी मुनि महाराज ने जैसे वह याग में रत्त रहना चाहते थे, तो महर्षि अटूटी किसी शास्त्रार्थ में से; किसी वैदिक चिन्तन में से आ रहे थे ऋषियों की सभा में से महर्षि प्रवाहण ओर शिलक उसकी सभा में से वे वहाँ आए। तो वह विद्वेष-भाव की चिन्ताओं में लगे, चिन्तन में लगे हुए थे। अहा वह कल्पना कर रहे थे यदि मैं प्रवाहण को ऐसा उच्चारण कर देता कि ब्रह्म तो ब्रह्म आभा में निहित रहता है तो यह चिन्तन एक द्वेषाभावातुर था। तो मुनिवरो! देखो इतने में ही 'श्वेताम् भविते ब्रह्मा' हनुमान जी ने कहा, गणेश जी ने कहा, प्रभु यह जो यन्त्र विद्यमान है कि आप की जो तरङ्गें हैं विचारों की याग में जो आपका विचार क्या रहा है?

यह यज्ञ के परमाणुओं को अशुद्ध बना रहा है। यह जो तरङ्गवाद जा रहा है, यह याग के स्वाहा के साथ में यह तुम्हारा दूषित हो गया है। आप यागद्वित आहुति न दीजिए क्योंकि विज्ञान के लिए परमाणुवाद को एकत्रित करने के लिए याग कर रहे हैं। महर्षि अटूटी ने कहा, प्रभु वास्तव में मेरा विचार दूषित है। उन्होंने आहुति देना शान्त कर दिया। परन्तु कुछ ऋषि और आ गए और देखो, उन ऋषियों में स्वाति मुनि महाराज ने याग प्रारम्भ किया। स्वाति मुनि महाराज ब्रह्मरूप बन करके यह जो विज्ञान, यह जो याग है यह जो विज्ञानमयी स्वरूप है। यह तो यज्ञमयी स्वरूप है यह तो परमपिता परमात्मा का अङ्ग है।

याग का उत्तम महत्त्व

जब सुगन्ध जैसे परमपिता परमात्मा प्रकृति के गर्भ में भरण कर देते हैं वही सुगन्धि अग्नि के गर्भ में देवत्व भेदन करने के लिए याग कर रहे हैं। तो जब वे याग में विद्यमान हो गए तो उनका याग सार्थक हो गया। वे जो याग की तरङ्गें थीं वह द्यौलोक में उनके यन्त्रों के साथ में जब लोक में प्रवेश कर रही थीं। यन्त्रों में दृष्टिपात कर रहे थे, यन्त्र स्थिर हैं। महाराजा गणेश जी बोले, देखो तुम्हारे ये जो शब्द हैं, यह जो स्वाहा है, साकल्य है इसका परमाणु वाक् बन करके द्यौलोक में प्रवेश हो रहा है। शब्दों के साथ में तारतम्य में लगा हुआ है। तो वह हर्ष ध्वनि होने लगी। याग मानो सम्पन्न हो गया। सम्पन्न हो करके याग एक ऐसा सूक्ष्म एक तन्तु है, एक ऐसा सूक्ष्म विचार है जिस विचार को ले करके याग जब पवित्र होता है, याग करने वाला पवित्र होता है, **याग तो सदैव ही पवित्र है।** अग्नि तो उसी प्रकार भेदन करता है, परन्तु तुम्हारे जो विचार हैं यदि वे दूषित होंगे, भावावृत्तियों में होंगे तो अग्नि को तो वही भेदन करना है, वही अन्तरिक्ष में पहुँचाना है, उन्हीं विचारों को द्यौलोक में पवित्र करके पहुँचाना है।

विचार-विनिमय क्या? हमारे यहाँ पुरातन कालों में याग का इतना उत्तम महत्त्व माना गया है कि योगेश्वर एक समय मुनिवरो! देखो **काकभुषण्ड जी के पिता जी सोमवृत्ति यह विचारने लगे** कि मुझे याग के द्वारा द्यौ लोक में प्रवेश करना है, द्यौलोक में जाना है। दण्डक वनों में जा करके याग करने लगे, समिधा चुनते रहते साकल्य को एकत्रित करते रहते जब वे याग करते। जब याग करते-करते एक समय वह याग कर रहे थे परन्तु देखो याग करते हुए मृगी (भृङ्गी) नामक ऋषि वहाँ आ पहुँचे। मृगी नामक आयुर्वेद के भी जानने वाले थे। जब वे याग में सम्मिलित होने लगे तो उस ऋषि को कहीं क्रोध आ गया था उनको क्रोध के आवेश में उनकी तरङ्गें द्वेष में भावान्तर हो रही थी। तो ऋषि ने कहा, ऋषिवर आपके जो विचार आ जायेंगे, उन्होंने कहा,

प्रभु आप यथार्थ उच्चारण कर रहे हैं। उन्होंने याग समाप्त कर दिया। तो **योगीजन वायुमण्डल को पवित्र बना करके जब साधना करता है तो उसकी साधना पूर्ण हो जाती है।**

यदि वायुमण्डल पवित्र नहीं हैं, वायुमण्डल में दूषितपन है जहाँ वह विश्राम कर रहा है। यदि दूषितपन है विचारों की दूषिता है, तो योगी की साधना भी पूर्णरूपेण को प्राप्त नहीं होगी। मेरे प्यारे! अनुष्ठान भी पवित्र नहीं होते। तो ये विचार और आत्मीयता का समन्वय रहता है। **आध्यात्मिकवाद इसे कहते हैं जो साम्यवाद को पवित्र करता है।** जो तरङ्गे अपने मानसिक जीवन को ऊँचा बनाती हैं। जिससे मानवीयता का दिग्दर्शन हो करके इस सागर से पार होने का प्रयास करता रहता है।

सर्वप्रथम याग

मैंने तुम्हें कई काल में वर्णन कराया है कि हमारे यहाँ जिस भी काल में ऋषि-मुनियों ने मानव जीवन के रहस्य तत्वों को जाना तो उसी काल में उन्होंनें याग को सबसे प्रथम माना है। बालक जन्म लेता है माता के गर्भ-स्थल से, उस समय भी याग की लोरियों का पान करते हैं। उस बालक को याग की लोरियाँ क्या है? गृह में सुगन्धि करते हैं, याग करते हैं और वह याग जैसे गर्भ में से बालक आया है उसके ही देखो उसके नथनों में, उसके अङ्गों में सुगन्धि जानी प्रारम्भ हो जाती है। उस समय उसका साकल्य चहुँ ओर और प्रकार का होता है, जैसा मुझे वशिष्ठ मुनि महाराज और आदि ऋषियों से यह प्राप्त हुआ है, ऐसा उन्होंने कहा है कि **बालक जब गृह में आए** तो उसमें गोगुली वर्णिका, सम्भेदी मृणीका आदि सुगन्धयुक्त पदार्थों द्वारा याग किया जाए तो उस बालक के अङ्गों का शोधन हो जाता है। उसके पश्चात् जितने भी संस्कार उसके सङ्गतिकरण हैं सबमें याग को प्रधान माना है। तो याग क्या है? याग है मानव का साकल्य के द्वारा सुगन्धि के द्वारा मानव के विचारों को सुगन्धित विचारों का समन्वय उनमें जब तक नहीं होगा

बाह्य औषधियों का विचार इतना प्रभावित नहीं करेगा। इसलिए विचार हमारा पवित्र होना चाहिए। विचार में सङ्कल्प होना चाहिए। जैसे माता का पुत्र माता के सङ्कल्प में ही कटिबद्ध रहता है, माता की पुत्री है वह पिता के संरक्षण में रह करके अपने सङ्कल्प से कटिबद्ध रहती है। इसी प्रकार यह जो सङ्कल्प है, सङ्कल्प की धारा है इसको ऊँचा बनाना, इनमें विचारों को प्रवीण करना, इससे ही मानव का कल्याण होता है। मानव कल्याणकारी बन करके अपने जीवन को ऊँचा बनाता है।

प्रभु का याग

आओ मेरे प्यारे! मैं विशेष विवेचना न देता हुआ, विशेष चर्चा न प्रकट करता हुआ मैं तुम्हें वहीं ले जाना चाहता हूँ, जब मानव यह स्वीकार करता है यह जो ब्रह्माण्ड है वह विज्ञानमयी स्वरूप है। **विज्ञान ही मानव की प्रतिभा है,** यह तो यज्ञमयी स्वरूप प्रभु है जब यह स्वीकार करता है कि प्रभु याग कर रहे हैं। हम उसके ज्ञाता बने हुए हैं, यह ब्रह्माण्ड एक यज्ञशाला है। यह पृथ्वी भी एक यज्ञशाला रूप बन करके रहती है। हम इसके गर्भ में हैं और परमपिता परमात्मा वसुन्धरा बना हुआ है। वह कहीं माता के रूप में प्रेरणा देकर के उसकी वहाँ वसुन्धरा माता बनी हुई है, कहीं पृथ्वी के गर्भ में प्रवेश होते तो पृथ्वी वसुन्धरा बनी हुई है, जब प्रभु की गोद में जाते हैं, तो प्रभु ही वसुन्धरा है। अपने में बसाने वाली माता वसुन्धरा है, कल्याण करने वाली है आनन्दमयी देने वाली है, वही पालन करने वाली वसुन्धरा है। जभी अपने में हम स्वीकार करते हैं तो कोई विज्ञान हो चाहे वह बाह्य जगत हो, चाहे वह अन्तर जगत का हो दोनों विज्ञान अपने में सार्थकता को प्राप्त होते हैं और दोनों का जब समन्वय होता है तो राष्ट्रवाद, समाजवाद, मानववाद ऊँचे बनते चले जाते हैं।

वैज्ञानिक बनने की प्रेरणा

आज मैं तुम्हें विचार देने के लिए आया हूँ कि प्रत्येक मानव को वैज्ञानिक बनना चाहिए, प्रत्येक मानव विज्ञान की धाराओं में रत्त रहना

चाहिए यह हमारा मानवीय जीवन पवित्रता की आभा में परणित होता हुआ इस संसार सागर से हम पार हो जाएँ। यह हमारा मन्तव्य है। यह जो नाना प्रकार की आभा वाला जगत है इसमें हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए जीवन-यापन करें जो हनुमान जी विज्ञान को अपने में सिञ्चन करते रहते। वे विज्ञान को अपने में लाते रहते थे, उस विज्ञान में जाना एक दूसरा, एक-दूसरे में रत्त रहकर के सङ्गतिकरण हो करके इस संसार की आभाओं का जन्म होता है। उसी प्रकार से उसको हम प्राप्त करते रहते हैं।

यह है बेटा! आज का वाक्। **आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्राय यह है** कि परमपिता परमात्मा मेरे देव हैं। वे परमपिता परमात्मा महान हैं। विज्ञानमयी स्वरूप हैं वह। चाहे भौतिकवाद हो, चाहे वैज्ञानिकवाद, चाहे आध्यात्मिकवाद हो दोनों प्रकार के विज्ञान उसकी संरक्षणता में हों तो उसका दुरुपयोग नहीं होगा, वह सार्थक बन करके अपने को प्राप्त होता रहेगा। **अपने को अपने में ही समावेश करना यह हमारा मानवीय जीवन है।** यह आज का वाक् समय मिलेगा मैं तुम्हें शेष चर्चाएँ कल प्रकट करूँगा। आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्राय यह कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए देव की महिमा का गुणगान गाते, सागर से पार हो जाएँ। यह बेटा! आज का वाक् और अब वेदों का पठन-पाठन।

वेद पाठ .....

पूज्य महानन्दजी अच्छा भगवन्! आज्ञा।
पूज्यपाद-गुरुदेव ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।

दिनाँक : 2 मार्च, 1985
समय : दोपहर 3 बजे
स्थान : लाक्षागृह, बरनावा

।। ओ३म् ।।

त्रिगुणात्मक सृष्टि सत्यमय

जीते रहो!

देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद वाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेद वाणी में उस मेरे देव जो पालन करने वाला है, जिसे हमारे यहाँ विष्णु कहा जाता है, उस विष्णु का हम गुण वादन कर रहे थे और वेद मन्त्र यह कह रहा था कि वह परमपिता परमात्मा विष्णु है और विष्णु कहते हैं पालन करने वाले को। वह सत्य में रहने वाला है। क्योंकि जितना भी मानव के हृदय में सात्विकवाद होता है उतना ही संसार में अपने जीवन को महान् बनाता रहता है। **जितना भी लालन-पालन होता है वह सतोगुण में होता है।** मेरी प्यारी माता जब अपने पुत्र का पालन करती है तो उसके हृदय में सतोगुण की प्रधानता होती है और सतोगुण की प्रधानता के कारण बालक का वह पालन करती है, उसे लोरियों का पान कराती है, तो उसके हृदय में एक सात्विकता होती है। तो जितना भी लालन-पालन है वह सर्वत्र विष्णु कहलाता है। विष्णु सत्य है और उसकी धारा शासनवाद। मेरी प्यारी माता जहाँ पालन कर रही है वहाँ वह शासन भी कर रही है। मानव भी शासन कर रहा है, अपनी प्रवृत्तियों पर शासन कर रहा है। माता भी शासन कर रही है और अपने पुत्र को शासनयुक्त बनाती हुई अपने में मग्नम्, अपने में आनन्दित होती रहती है। इसी प्रकार यह जो संसार है, **इस संसार के तीन स्तम्भ माने गए हैं,** जैसे हमारे यहाँ विष्णु है, शिव है और ब्रह्मा है। तो शिव कहते हैं शासन करने वाले को और ब्रह्मा कहते हैं उत्पत्तिवाद को।

तीन स्तम्भ

मेरे प्यारे! यह तीन गुण कहलाते हैं जिनको रजोगुण, तमोगुण और सतोगुण कहा जाता है। यह उनके नामोकरण में रहते हैं। परन्तु इसी प्रकार प्रभु के भी तीनों नामोकरण कहलाए जाते हैं। विष्णु परमात्मा को कहते हैं, वह पालन कर रहा है संसार का। रजोगुण शिव को कहते हैं, क्योंकि परमात्मा का नाम भी शिव है। वह शासन में इस संसार को कड़ी से कटिबद्ध करने वाला है। शासन कर रहा है और तमोगुण में इस संसार की उत्पत्ति कर रहा है। तो इसी प्रकार इन तीनों गुणों का गुण वादन हो रहा है। मेरे प्यारे! जब वैज्ञानिकों ने पृथ्वी के गर्भ में वास किया और उसके गर्भ में आभा को प्रकट करने लगे तो उसमें गति दृष्टिपात आने लगी और वह जो गतियाँ हो रही थीं उन गतियों को अपने में धारण करने वाला एक महान् ओजस्व तत्त्व कहलाता है। इसी विचार को, वेद मन्त्र को ले करके त्रेता के काल में महर्षि भारद्वाज और सुमेतकेतु परस्पर विचार-विनिमय करते रहते थे। मेरे पुत्रो! जब कुम्भकरण और भारद्वाज की चर्चा होने लगी तो वह परस्पर विचार देते रहते थे। जब वेद मन्त्र में तीनों गुणों का वर्णन आया, परमात्मा के वाची शब्दों की विवेचना आने लगी तो ऋषि ने कहा, हे वैज्ञानिक तथ्यों के जानने वाले! वेद का मन्त्र यह कहता है कि यह जो संसार है, यह तीन गुणों में व्याप रहा है। तो महाराजा कुम्भकरण ने कहा, महाराज! यह तो मैंने जान लिया कि तीनों गुण हैं परन्तु इन तीनों गुणों का विज्ञान से क्या सम्बन्ध रहता है? मेरे प्यारे! महर्षि भारद्वाज मुनि ने कहा, हे पुलस्त्य गोत्रों में जन्म लेने वाले यह तो स्पष्ट हो रहा है कि तीनों गुणों में ही सर्वत्र विज्ञान गति करता रहता है। जहाँ पाँच इस प्रकार की गति मानी जाती हैं वहाँ तीन गुण इसकी परिधि में विद्यमान रहते हैं। तीनों ही गुणों में वह व्याप्त रहने वाला विज्ञानमयी धाराओं का रमण करता रहता है।

सतोगुण क्या है

महाराजा कुम्भकरण ने कहा, मैं यह जानना चाहता हूँ कि सतोगुण क्या है? उन्होंने कहा, सतोगुण पालन है, जैसे परमपिता परमात्मा सतो में रमण करता हुआ इस संसार का पालन कर रहा है। चाहे वह प्राणी पृथ्वी-मण्डल का हो, चाहे वह मङ्गल में गति करने वाला हो, चाहे वह बुद्ध में रहने वाला हो, परन्तु सूर्य-मण्डल के प्राणियों का किसी भी आभा में, चाहे वह परमाणुवाद शब्दों के रूप में परमाणु गति करने वाला हो, परन्तु वह परमाणुओं का सर्वत्र गायक पालन स्वरूप बना हुआ है। ब्रह्म का वह आयतन है, आयतन कहते हैं कि ब्रह्म का वह गृह है और ब्रह्म के गृह में वह वास कर रहा है। वह विष्णु बनकर के वास कर रहा है। इसी प्रकार जितना भी लालन-पालन है वह माता के हृदय में रहता है। मानव के हृदयों में गति करने वाला है, तो उसे वेद कहता है विष्णु।

इसी प्रकार जितना भी संसार का शासनवाद है, हे कुम्भकरण! जितना भी शासन हम तुम कर रहे हैं, एक आचार्य है, विद्यालय में शिक्षा दे रहा है, परन्तु उसके हृदय से उद्गार उत्पन्न हो रहे हैं। निगली हुई विद्या का वह ब्रह्मचारियों के समीप वमन कर रहा है और ब्रह्मचारी उसको ग्रहण कर रहा है। वह शिक्षा दे रहा है, वह उसका सतोगुण है। सत्य के ऊपर उसका विशुद्ध उच्चारण नहीं होता तो उसको दण्डित करता है अनुशासन में लाने के लिए, वह उसका रजोगुण कहलाता है। वह सत्य को धारण कराने के लिए ही, सत्य का पालन कराने के लिए ही, सत्य के सूत्र में रजोगुण विद्यमान रहता है। उसमें सतोगुण कई सूत्र में रहता है। इसी प्रकार माता-पिता अपने में यह चाहते हैं, माता कहती है मैं पुत्र याग करना चाहती हूँ, पिता कहता है मैं पुत्र याग करना चाहता हूँ। तो मुनिवरो! वह उस तमोगुण के गर्भ में तपने की आभा विद्यमान रहती है। वह सङ्कल्प है और वह सङ्कल्प सतो में नहीं, रजो में रहता है। रजो में नहीं, वह तमो में भी रहता है।

मेरे पुत्रो! वह जो रजोगुण, तमोगुण की आभा रमण कर रही है वह भी सत्य के गर्भ में विद्यमान है, वह भी सत्य के गर्भ में है, क्योंकि **माता का हृदय माता का पुत्र है, पिता का हृदय पिता की पुत्री है।** वह सब सतो से सुगठित रहते हैं। प्रभु ने इस संसार को कैसे सूत्र में पिरोया है? कैसा सूत्र है बेटा! जिसमें रजोगुण, तमोगुण समाहित रहता है।

मुझे स्मरण आता रहता है, इसी वाक्य को ले करके महर्षि भारद्वाज मुनि के यहाँ रावण का जितना भी वंश था वह विज्ञान में रत्त रहता था और विज्ञानवेत्ता महाराजा कुम्भकरण और ब्रह्मचारी सुकेता इन्हीं उपदेशों को ले करके वह पृथ्वी के गर्भ में पहुँच गए, जहाँ खनिजों का निर्माण हो रहा था। बेटा! सत्य में जो ज्योति आ रही थी उस ज्योति के सन्निधानमात्र से ही उसके भिन्न-भिन्न प्रकार के स्वरूप बन गए। वहाँ स्वर्ण का निर्माण भी हो रहा है, वहाँ रत्नों का निर्माण भी हो रहा है। उसी पृथ्वी के गर्भ में नाना प्रकार की धातुओं का चयन भी हो रहा है। जल को शोधित किया जा रहा है। जल को शक्तिशाली बना करके वाहन उस जल से गति करते हैं। तो परिणाम क्या? पृथ्वी के गर्भस्थल में सूर्य जो द्यौ से प्रकाश लेता है और वह प्रकाश नाना रूपों को ले करके पृथ्वी से उसका सन्निधान होता है। उसके सन्निधानमात्र से ही नाना किरणों के रजोगुणी, तमोगुणी और सतोगुणी रूप बन करके इस पृथ्वी के गर्भ में नाना प्रकार की धातुओं के पिपाद बन रहे हैं। निर्माण हो रहा है और वह निर्माण हो करके विज्ञान की और राष्ट्र की मौलिक सम्पत्ति को उत्पन्न किया जाता है। तो परिणाम क्या? एक-एक किरणों के भिन्न-भिन्न प्रकार के स्वरूप माने गए हैं और नाना प्रकार की किरणों के स्वरूपों में एक महान् विज्ञान निहित रहता है।

सूर्य की किरणों से वाहन गतिवान्

मेरे प्यारे! महाराजा कुम्भकरण ने कहा कि प्रभु! उन किरणों को हम यन्त्रों में कैसे ला सकते हैं। तो मुनिवरो! महर्षि भारद्वाज मुनि के

यहाँ इतनी इस प्रकार की विज्ञान शालाएँ थीं कि जिन विज्ञानशालाओं में उन किरणों का निरोध किया जाता था। वह किरणें जल को पृथ्वी के गर्भ में शक्तिशाली बना करके उसके रूप का परिवर्तन कर रही थीं और राष्ट्र के वैज्ञानिकजनों ने पृथ्वी के गर्भ में इस जल को ले करके उसका शोधन करके उसको कार्यरूप दे दिया। भारद्वाज के यहाँ एक ऐसी विज्ञानशाला थी जहाँ सूर्य की किरणों को यन्त्रों में लिया जा रहा था और उन सूर्य की किरणों से वाहन गति करते थे। आज मैं विज्ञान के स्वरूप में तो तुम्हें नहीं ले जा रहा हूँ परन्तु राजा रावण के यहाँ इस प्रकार के वाहन यन्त्र थे जो सूर्य की किरणों से गति करते थे। कोई मङ्गल की परिक्रमा कर रहा है, कोई चन्द्रमा की परिक्रमा कर रहा है, कोई शनि की परिक्रमा कर रहा है। मुनिवरो! उस सूर्य की किरणों से यन्त्रों में गति रहती थी।

वैदिक साहित्य विज्ञान का स्त्रोत है

परिणाम यह कि हमारे यहाँ भारद्वाज मुनि महाराज ने महाराजा कुम्भकरण इत्यादियों को नाना प्रकार की आभाएँ वर्णित करायीं। वह विज्ञान उस काल में महत्ता में गति करता रहा है। आज मैं त्रेता के काल में तुम्हें उस विज्ञान की चर्चा कर रहा हूँ जिन विज्ञानवेत्ताओं ने विज्ञान में जाने के पश्चात् मानवीयत्व अपनी आभा में गति करता रहा है। मुनिवरो! विचार क्या? राजा रावण और भारद्वाज मुनि की चर्चाएँ भी होती रही हैं। एक समय भारद्वाज मुनि महाराज से कहा, इस प्रकार का विज्ञान वैदिक साहित्य में रहा है, तो हमारे राष्ट्र में इस वैदिकता का अध्ययन होना चाहिए। भारद्वाज ने कहा, तुम्हारे यहाँ होता रहता है, विद्यालयों में होता रहता है, विश्वविद्यालयों में होता रहता है, तुम्हारे यहाँ **विश्व-कृति याग** का चयन होता रहता है, याग होता रहता है। यह याग कहलाया जाता है जिस याग में सुगन्धि से तो वायुमण्डल को पवित्र बनाते हैं। यह जो वायुमण्डल है, इस वायुमण्डल में परमाणु गति कर रहा है, शब्दों के साथ गति कर रहा है। आभा में रहने वाला

यह विज्ञान है। परन्तु इस विज्ञान, इस परमाणुवाद को साकल्य अग्नि की धाराओं पर विद्यमान करके गति कर रहा है। जब महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज ने ऐसा वर्णन कराया तो राजा रावण मौन हो गए। प्रातःकालीन उनके यहाँ याग होता रहता था। महारानी मन्दोदरी नाना प्रकार के प्रश्न करती रहती थी। क्योंकि भिन्न-भिन्न प्रकार की दिशाएँ होती हैं विज्ञान की। राष्ट्र में भिन्न-भिन्न प्रकार के वैज्ञानिक होने चाहिए जैसे आयुर्वेद के जानने वाले आयु को ऊँचा बनाने वाले हों।

प्राण-चिकित्सा

मेरे पुत्रो! राजा रावण के काल में जहाँ वनस्पति विज्ञान ऊँचे शिखर पर रहा है वहाँ प्राण-चिकित्सा भी रही है। हमारे यहाँ जो प्राण-चिकित्सा है वह सबसे ऊर्ध्वा में रही है। महर्षि भारद्वाज मुनि के यहाँ एक सोमकेतु ऋषि महाराज रहते थे। सोमकेतु ऋषि महाराज वह प्राण-चिकित्सा जानते थे। वह प्राण के विज्ञान को भी जानते थे। किस प्राण से कैसे रुग्णों को समाप्त किया जा सकता है। तो मुनिवरो! प्राण के ऊपर निरोध, नाना प्रकार की धाराएँ, इस प्राण में से उत्पन्न होती रहती हैं जिसके ऊपर मानव जैसे शीतलम् प्राणायाम होता है, जैसे उद्गीताम् प्राण होता है। वह प्राणायाम किया जाता है। मुनिवरो! मानव के शरीर में अग्नि प्रदीप्त हो गयी है। अग्नि को शान्त करने के लिए शीतल प्राण-चिकित्सा होती है। शीतलता आ गई है तो सूर्य प्राणायाम से इसमें अग्नि प्रविष्ट की जाती है। यदि अग्नि और शीतलता दोनों का समन्वय हो गया है तो उस काल में चन्द्र-प्राणायाम किया जाता है, उससे रुग्णों को शान्त किया जाता है।

मानवीय दर्शन

मैं इस सम्बन्ध में चर्चा देने नहीं आया हूँ। यह तो धाराएँ हैं। परन्तु विचार-विनिमय क्या है? विज्ञान के प्राण के रूपों से नाना प्रकार के भेदन माने गए हैं। तो विचार यह देना है, भारद्वाज मुनि ने यह

कहा था कि संसार में जितना भी सतोगुण है वह सतोगुण के सूत्र में कटिबद्ध होने वाला यह शरीर संसार कहलाता है। तीन स्तम्भ इस ब्रह्माण्ड के, इस मानवीय जगत् के माने गए हैं। इन तीनों प्रकार की आभाओं को लेकर के मानव अपने को विचित्र बनाता है और विज्ञान वैज्ञानिक बनाता है, महान् बना देता है। तो मेरे पुत्रो! विचार क्या कि हम वैज्ञानिक बनें। हम अपने में महत्ता को प्राप्त होते रहें। सतोगुण में विष्णु है, रजोगुण में शिव है और तमोगुण में ब्रह्मा माना गया है। यह वाची शब्द कहलाते हैं। इन तीनों प्रकार के कर्मों में मानवीय दर्शन गुथा हुआ है। वह सत्य से भी ऊर्ध्वा में गति करता है जो महासत्य है। एक रजोगुण में भी धारा है जो महा रजोगुणी है। एक तमोगुण में धारा है जो महा-तमोगुणी कहलाती है। जैसे परमात्मा की रचना है वह महाधारा है। जैसे परमात्मा का शासन है वह महाधारा है। जैसे सतोगुण में विष्णु रूप है वह प्रभु का पालन एक महाधारा है तो मेरे प्यारे! यह नाना प्रकार की धाराओं में यह मानव इस संसार को एक मौलिक कहलाता है। इसमें भी भिन्न-भिन्न प्रकार की धाराएँ हैं। एक आन्तरिक पालन है, एक बाहरीय जगत का पालन है। एक आन्तरिक तमोगुण है, एक बाहरीय तमोगुण है। एक आन्तरिक रजोगुण है, एक बाहरीय रजोगुण कहलाता है। आन्तरिक तमोगुण किसे कहते हैं? मानव के सम्बन्ध में यह दस इन्द्रियाँ कहलाती हैं। ज्ञान से उनके ऊपर शासन करने का नाम **महारजोगुण** कहलाता है और मुनिवरो! इस संसार में जो नाना प्रकार की उपलब्धियाँ हैं और वह उपलब्धियाँ क्या हैं? कि संसार के आकार को बनाना यह परमाणुवाद है, इससे गुथा हुआ यह मानवीय तत्त्व कहलाता है। इस मानवीय तत्त्व को जानना और उसमें से जो उपलब्धियाँ होती हैं उन्हें साकार रूप देना, यह सात्विक से बँधा हुआ तमोगुण, **महातमोगुण** कहलाता है।

महातमोगुण से वैज्ञानिक द्वारा बालक की रचना

जैसे एक वैज्ञानिक है, एक आध्यात्मिक विज्ञानवेत्ता है। आध्यात्मिक

विज्ञानवेत्ता को लिया जाए अथवा भौतिक विज्ञानवेत्ता को लें। परन्तु भौतिक विज्ञानवेत्ता ने यह दृष्टिपात किया कि माता के गर्भ से बालक की उत्पत्ति कैसे होती है? प्राणी कैसे होता है? तो वह उन आभाओं को वायुमण्डल में से लेना प्रारम्भ करता है और धातु पिपाद को ले करके वह यन्त्रों का निर्माण करता है। यन्त्रों को जब उसने निर्माण किया तो उसमें जो माता के गर्भ में वह जो आनन्दमङ्गलम् जैसे रस प्रदान किया जा रहा है, स्वतः हो रहा है माता को ज्ञान नहीं है, परन्तु वह स्वतः ही हो रहा है। तो ऐसे वैज्ञानिकजन इन धातुओं को जानकर के और यन्त्र का निर्माण करके जो रस माता के गर्भ में विद्यमान होता है उस रस को ले करके वह यन्त्रों में स्थिर करते हैं और वह जो क्रियाकलाप जो माता के गर्भ में होता है वह क्रिया दे करके वह वैज्ञानिक महा-तमोगुण को ले करके बालक की रचना कर देता है।

महा-सतोगुण

इसी प्रकार मेरे प्यारे! शासन है, सतोगुण है। महा-सतोगुण उसे कहते हैं जैसे प्रभु पालन कर रहा है। माता अपने बालक का पालन कर सकती है, क्योंकि वह माता का हृदय माना गया है। उसमें माता की तीनों प्रवृत्तियाँ कटिबद्ध रहती हैं, उसमें समाहित रहती हैं। तो मुनिवरो! वेद का आचार्य कहता है, वेद का ऋषि कहता है कि इसमें वह अभ्याद् गति से गति करती रहती हैं, ''नौ महा अमृते'' वह दूसरे बालक का पालन नहीं कर सकती। क्योंकि उस बालक का तमोगुणी प्रवृत्ति से अपवाद नहीं होता। परन्तु रजोगुण भी नहीं है। सतोगुण से वह पालन तो कर रही है। वह एक बाहरीय पालन कहलाता है और जो प्रभु ब्रह्मा बन करके इस संसार का पालन करता है वह प्रवृत्ति भी उसमें है, शासन भी उसमें है, सतोगुण भी है, विष्णु कहलाता है। परन्तु अपनी आभा में वह आन्तरिक और मौलिकता में गति करता है। वह साम में प्रवृत्ति में लाता है।

मुनिवरो! यहाँ पालन भी दो प्रकार के माने गए हैं एक द्यौ है जो पालन कर रहा है अपनी द्यौ शक्ति से अपने तेज से तेजोमयी इस संसार को बना रहा है वह पालन कर रहा है। जैसे माता संकीर्णता से अपना पालन करती है वह सतोगुण है। परन्तु वह एक आभा में है, वह एक सीमा में है। प्रभु की कोई पालन करने की सीमा नहीं है और मानव की पालन करने की एक सीमा रहती है। तो मेरे प्यारे! इन वाक्यों को ले करके मानव को बहुत अनुसन्धान करना है। वैज्ञानिक तथ्यों को ले करके वैज्ञानिकजनों ने इसके ऊपर बहुत अनुसन्धान किया और अनुसन्धानवेत्ताओं ने इसके ऊपर विश्लेषण करते हुए, मानवीय आभा को जानते हुए अपनी क्रियाओं में अपने जीवन को ले गए।

प्रभु का निर्माण अभ्याद् गति रहता है

मुनिवरो! मैं तुम्हें त्रेता के काल की वार्ता प्रकट कर रहा था। महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज जहाँ विज्ञानवेत्ता थे, वहाँ वह आध्यात्मिक विज्ञानवेत्ता भी रहे। मेरे प्यारे! आध्यात्मिक विज्ञान उनका बहुत ऊर्ध्वा में रहा है। क्योंकि वह ध्यानावस्थित हो करके अपनी आत्मा से संसार को दिव्य दृष्टि से दृष्टिपात करते रहे हैं, और विज्ञान के यन्त्रों को जान करके वह इस विज्ञान को आभा में लाते रहे हैं। मेरे पुत्रो! प्रभु का विज्ञान इतना नितान्त है, इतना महान है जैसे मानव नाना प्रकार के परमाणुओं, अणुओं को जान करके और वह नाना यन्त्रों का निर्माण करता है। परन्तु वह निर्माण करे या न करे परन्तु प्रभु का निर्माण अभ्याद् गति रहता है। वह आभा में रहने वाला एक अभ्याद् गति से करता है जिसके ऊपर मानव परम्परागतों में अनुसन्धान करता रहा है और उस आभा में गति करता रहा है जिस आभा में गति करने वाला मानव अपने में धन्य स्वीकार करता है।

मुनिवरो! विचार-विनिमय क्या इन दोनों का परस्पर विचार-विनिमय होता रहता था। तो यहाँ वैज्ञानिक जन इस पृथ्वी के गर्भ में जो तमोगुण

से रचना हो रही है, जो प्रभु की दी रचना हो रही है वह प्रभु तमोगुण में रहने वाला है और जो शासन कर रहा है वह अपनी सीमा में गति हो रही है। स्वतः हो रही है, तो वह रजोगुणी सिद्ध कहलाता है और उनका पालन हो रहा है। उन्हें कोई नष्ट भ्रष्ट नहीं कर सकता उसका पालन भी हो रहा है। यह तीनों गुण प्रभु के तेज से उत्पन्न हो रहे हैं जो प्रत्येक प्राणी के हृदय में विद्यमान रहते हैं।

जो अपनी प्रवृत्तियों को सतोगुणी बना लेता है उसके लिए यह संसार सत्य हो जाता है। जब मानव अपनी प्रवृत्तियों को रजोगुणी बना लेता है उसके लिए यह संसार रजोगुणी बन जाता है। मुनिवरो! यह मानव अपने को तमोगुणी बना लेता है तो उसके लिए संसार तमोगुणी बन जाता है।

महर्षि अत्रि मुनि महाराज का सत्यमय जीवन

अब यह बड़ा एक विचार का विषय बन गया है। आज मैं ऐसे वन में चला गया हूँ जहाँ एक मार्ग को, दूसरे मार्ग को मैं समाधान कर रहा हूँ तो तीसरा उद्दीप्त हो जाता है। विचार क्या है? मुनिवरो! जैसे सतोगुणी है, एक मानव सत्य का उच्चारण कर रहा है उस मानव के लिए सत्यमयी कल्पना आ जाती है उसके समीप वह मानव सत्य की कल्पना क्या कर रहा है? मुझे स्मरण आता रहता है बेटा! इन तीनों गुणों के ऊपर अध्ययन करने वाले बहुत से ऋषि हुए हैं जैसे महर्षि अत्रि मुनि महाराज एक समय बेटा! भयङ्कर वन में जा करके यह कल्पना करने लगे। वह अपने जीवन को सत्यमय बनाने लगे तो इतना सत्य में ले गए अपने को कि प्रत्येक हृदय में सत्य ही सत्य दृष्टिपात आने लगा। इतना गम्भीर उसने अध्ययन अपना किया और अपने को सत्य में पिरो दिया। पिरोने का परिणाम यह हुआ कि हिंसक प्राणी आता ऋषि के चरणों को स्पर्श करता। तमोगुणी आता वह भी स्पर्श करने लगा। मुनिवरो! उसकी सतोमयी धारा विचित्र बन गयी। एक समय

महर्षि अत्रि मुनि महाराज जब अपने को सतोमयी बना रहे थे तो उनके आश्रम के निकट एक महात्मा दिग्ध रहते थे। महात्मा दिग्ध ने अपना यह सङ्कल्प किया कि यह जो महर्षि अत्रि मुनि हैं यह अपने को क्या जानते हैं? क्योंकि दिग्ध उसे कहते हैं जो अभिमानी होता है। वह दिग्ध अभिमानी थे। महर्षि दिग्ध ने अपने शिष्यगणों को एकत्रित करके ऋषि पर आक्रमण के लिए गमन किया। परन्तु जैसे वह सत्य का पालन कर रहे थे, अहिंसा परमोधर्मः का पालन कर रहे थे तो मुनिवरो! वह शिष्य दिग्ध को त्याग करके अत्रि के चरणों में ओत-प्रोत हो गए। महात्मा दिग्ध ने कहा, यह तुमने क्या किया? उन्होंने कहा कि महाराज! इनका जो चिन्तन है, जो तप है, जो निष्ठा है, हमारे हृदय को उनकी निष्ठा ने विदीर्ण कर दिया है और विदीर्ण होकर के हम इनके चरणों में ओत-प्रोत हो गए हैं। मेरे प्यारे! महात्मा दिग्ध मौन हो गए और महात्मा दिग्ध ने जब ऋषि के नेत्रों की ज्योति को दृष्टिपात किया तो वह भी मौन हो गए। मेरे प्यारे! उन्होंने दिग्धपना त्याग दिया। तो विचार-विनिमय क्या? मुनिवरो! यह संसार सतोमयी कहलाता है। मुनिवरो! जो सत्य का पालन करता है, सात्विक प्राणी उसके समीप आने प्रारम्भ हो जाते हैं वह सतमयी पालन करते हुए देखो आभा में रमण करते रहते हैं।

मानव ऊँची कल्पना बनाए

विचार-विनिमय क्या? मेरे पुत्रो! प्रत्येक मानव अपनी सत्यमयी धारा को बना लेता है। एक मानव दर्शनों का अध्ययन करता है। सत्य को उच्चारण करता है। सत्यमयी होता है तो दार्शनिक जब आने प्रारम्भ ही जाते हैं क्योंकि प्रभु का यह जो जगत् है वह एक प्रकार का कल्प वृक्ष कहलाता है। मानव को अपनी कल्पना ऊँची बनानी चाहिए। **ऊँची कल्पना वाला प्राणी महान् और पवित्र बन जाता है, दार्शनिक बन जाता हैं। दर्शनों की आभा में रमण करने लगता है।** मृत्यु का भय नहीं रहता, क्योंकि मृत्यु अन्धकार में रहती है। तो विचार विनिमय क्या? हमें ज्ञान का प्रकाश होना चाहिए। ज्ञान के प्रकाश में रमण करने

वाला विज्ञानवेत्ता बन जाता है। यहाँ वैज्ञानिक बनने के लिए रजोगुणी, तमोगुणी दोनों विचारों की आवश्यकता रहती है। वह रचना कर रहा है। तरङ्गों को जान रहा है। तरङ्गों को अपने में लाना चाहता है। निर्माण कर रहा है।

प्रकृति की आस्वाद गति

मुनिवरो! प्रभु के राष्ट्र में वैज्ञानिक हो, न हो, परन्तु इस प्रकृति का विधान है, इस प्रकृति का नियम है जैसे विश्व हो वैसे विश्वायतनम् होता रहता है। परमाणुओं का आपस में दोषारोपण हो करके विजातीय और जातीय दोनों का मिलान हो करके उनका आक्रमण भी होता रहता है वह जो आक्रमण है, वह प्रकृति का प्रकोप कहलाता है। वह साधारण रूप में दोषारोपण की प्रकृति में, आभा में गति कर रही है। यह प्रकृति की आस्वाद गति कहलाती है।

जहाँ प्रकृति के दोष तीन प्रकार के दैविक प्रकोप से कटिबद्ध रहते हैं, जो दैविक प्रकोपों में मानव समाज नष्ट होता रहता है। मुनिवरो! जातीय और विजातीय जब दोनों पदार्थों का मिलान होता है तो समुद्रों में अग्नि प्रदीप्त हो जाती है और समुद्रों का जल चन्द्रमा की कान्ति के साथ गति करता है और वही जल अति-वृष्टि, अना-वृष्टि में परणित हो करके इस समाज को नष्ट कर देता है।

दैविक प्रकोप

मेरे प्यारे! मुझे बहुत सूक्ष्म समय हुआ, मेरे प्यारे महानन्द जी ने वर्णन कराया था और यह वर्णन कराया कि बड़वानल नाम की अग्नि प्रदीप्त हो गई है और वह अग्नि जल को उत्थान देती हुई समाज को नष्ट कर रही है। राष्ट्र के राष्ट्र नष्ट हो जाते हैं। मुझे स्मरण आता रहता है त्रेता के काल में एक समय जलप्लावन आया और वह जलप्लावन ऐसा आया, समुद्र के तट पर जितने प्राणी थे, एक-एक योजन की दूरी तक सर्वत्र जल का उत्थान आया, उत्थान होते हुए

उनको, सबको समुद्र ने अपने में अर्पित कर लिया, क्योंकि समुद्र में अग्नि प्रदीप्त हो जाती है। जैसे काष्ठ में अग्नि विद्यमान हो करके वन को समाप्त कर देती है, इसी प्रकार बड़वानल नाम की अग्नि जब जल में प्रदीप्त हो जाती है तो यह जो जल है, यह समाज को अपने में निगल जाती है। तो यह अग्नि ही निगल जाती है। तो परिणाम क्या? मुनिवरो! इसको हम दैविक प्रकोप कहते हैं। जातीय-विजातीय पदार्थों का जहाँ समन्वय हुआ और अग्नि प्रदीप्त हो जाती है। जैसे मानव के मस्तिष्क में मोह और घृणा दोनों का समन्वय हो करके मानव का मस्तिष्क नष्ट हो जाता है, इसी प्रकार यह महत्ता में गति करने वाला जगत् है आभा में रमण कर रहा है।

सतोमयी संसार

मुनिवरो! इस संसार को सतोमयी दृष्टिपात करते रहें। सत्यमय रहते रहेंगे तो गृह महान बनेंगे, राष्ट्र महान् बनेगा। ज्ञान और विज्ञान में गति करने वाला राष्ट्र होना चाहिए। आज मौलिक अनुसन्धान करना है, प्रत्येक वाक्यों पर अनुसन्धान करना है। राजा वह पवित्र होता है जो रजोगुणीमय, सतोगुणीमय दोनों की आभा को ले करके गति करता है। जो अपने समाज को कर्त्तव्य के मार्ग पर लाता है और यदि कर्त्तव्य के मार्ग पर नहीं लाता है तो वह राष्ट्र पवित्र नहीं होता। जो राजा समाज को कर्त्तव्य में न लगा सके वह राजा नहीं कहलाता और जो माता अपने पुत्र को चरित्रवान न बना सके, वह माता नहीं है। तो इसीलिए प्रत्येक मानव अपनी-अपनी आभा में रमण कर रहा है। भारद्वाज मुनि ने यह वाक्य बहुत पुरातन काल में वर्णन किया। आज मैं बेटा! उनके विचारों की पुष्टियाँ कर रहा हूँ। उनके विचारों को दे रहा हूँ कि समाज में यदि विद्यालय में ब्रह्मचारी है, ब्रह्मचारी को यदि वह शिक्षित नहीं बना सकता, उसके मस्तिष्क की ग्रन्थियों को स्पष्ट नहीं कर सकता तो वह आचार्य नहीं कहलाता। इसी प्रकार हमारे यहाँ यह तीन ही शब्द कहलाए गए हैं, एक माता के द्वार पर कुञ्जी है,

एक राजा के द्वार है और एक आचार्य के द्वार है। माता अपने पुत्र को सुचरित्र उपदेश नहीं दे सकती तो वह माता नहीं कहलाती और जो आचार्य विद्या से ब्रह्मचारियों की ग्रन्थियों को स्पष्ट नहीं कर सकता, वह आचार्य नहीं है और जो राजा समाज को कर्त्तव्यवाद नहीं दे सकता, वह राजा नहीं कहलाता। तो इसीलिए कर्त्तव्यवाद में रमण करते हुए, प्रभु के ज्ञान-विज्ञान के इस सागर से पार होना चाहिए।

बेटा! आज का हमारा यह वाक्य क्या कह रहा है, हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, देव की महिमा का गुणगान गाते हुए हम ज्ञान और विज्ञान में रमण करते रहें, हम रजोगुण और तमोगुण, सतोगुण इन तीनों गुणों में अपने जीवन की आभा को आभायित करते रहें क्योंकि यह सब सत्य से गुथा है। **मेरे प्यारे! एक ही गान है, एक ही गान में बेटा! तीनों गुण पिरोए हुए हैं। एक ही सूत्र है और एक ही सूत्र में तीनों गुण पिरोए हुए हैं।** इसके ऊपर हमें विचार-विनिमय करते हुए इस संसार सागर से पार होना चाहिए। मैं बेटा! इसके आगे की चर्चाएँ तो कल ही प्रकट करूँगा। **आज का विचार क्या? कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, ज्ञान और विज्ञान की आभा में रमण करते हुए अपने जीवन को महान् बनाते चले जाएँ।** समय मिलेगा तो शेष चर्चाएँ हम कल प्रकट करेंगे।

वेद पाठ .....

पूज्य महानन्दजी अच्छा भगवन्! आज्ञा।
पूज्यपाद-गुरुदेव ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।

दिनाँक : 2 मार्च, 1982
समय : दोपहर 3 बजे
स्थान : लाक्षागृह, बरनावा

॥ ओ३म् ॥

ऋषियों के उद्‌गार

1. समाज में यज्ञ होने चाहिए, अपने जीवन को सुन्दर बनाने का प्रयास करना चाहिए।
2. जीवन बनता उस काल में है, जबकि हम अपने जीवन में प्रत्येक तरङ्ग को हम परमात्मा को समर्पित कर देते हैं।
3. जहाँ शिक्षा नहीं होती वहाँ विचार भी नहीं होता, जहाँ विचार नहीं होता वहाँ विवेक भी नहीं होता और जहाँ विवेक नहीं होता वहाँ पाप और पुण्य की मानव को जानकारी भी नहीं होती।
4. हिंसा को त्यागकर सत्य का आश्रय लेकर दृढ़ता और साहस के साथ विचारों की क्रान्ति होनी चाहिए।
5. अध्यात्मिक ज्योति का जो धृत है वह ज्ञान है, विज्ञान है, क्योंकि ज्ञान और विज्ञान से मानव का आत्मबल बलिष्ठ होता है।
6. मानव द्वारा किए गए यज्ञों का घृत ही सूक्ष्म रूप हो करके द्युलोक में रमण करता है वह सूक्ष्म रूप हो द्यु-लोक का घृत है।
7. नाना रूपों वाली प्रकृति ही को दुर्गा, माँ काली, माँ वैष्णवी आदि नामों से कहा गया है।
8. मानव का मन प्रकृति की सबसे सूक्ष्म वस्तु है। मन को प्रवृत्तियों के संयम से आत्मा के लोक में गमन कर सकता है।
9. संयमशील आत्मा को ही दुर्गा, महालक्ष्मी कहा गया है।
10. चैत्र के नवरात्र में प्रतिपदा से लेकर अष्टमी तक पृथ्वी पर प्रकृति की गति शान्त रहती है।
11. चैत्र मास में यज्ञ किए जाते, अनुष्ठान किए जाते, प्रकृति की उपासना की जाती है जिससे वायुमण्डल शुद्ध हो वातावरण शुद्ध हो जिससे अन्य भी दूषित न हो।
12. वायुमण्डल जितना शोधित होता है उतनी ही कृषक की भूमि पवित्र होती है।
13. एक वर्ष में दो समय अनुष्ठान होता है एक क्वार मास होता है एक चैत्र मास ये होता हैं।

दान-सूची

वैदिक अनुसन्धान समिति के प्रकाशन के कार्य के लिए निम्न याज्ञिक एवम् श्रद्धालु महानुभावों ने अपना सात्त्विक सहयोग प्रदान किया है :

1.	श्री महेश त्यागी, वसुन्धरा, गाजियाबाद	500 रुपये
2.	श्री ब्रजपाल शर्मा, शेखर अपार्टमेंट मयूर विहार फेस-1	5100 रुपये
3.	श्री प्रताप सिंह, फफुन्डा	100 रुपये
4.	श्री साहब सिंह, दाहा	100 रुपये
5.	श्री नरेश जी, दाहा	100 रुपये
6.	श्री ओम प्रकाश संदौडी	50 रुपये
7.	श्री प्रमोद जी	250 रुपये
8.	श्री वैदिक यज्ञ समिति सौञ्जनी	500 रुपये
9.	श्री सुबेसिंह चिरोड़ी	100 रुपये
10.	श्री योगेन्द्र सिंह, बुलन्दशहर	500 रुपये
11.	मास्टर फकीर चन्द त्यागी, चमरावल	100 रुपये
12.	श्री अंगद जी, दिल्ली	100 रुपये
13.	श्रीमति उषा जी, मुरादनगर	100 रुपये
14.	श्रमति शारदा जी, दिल्ली	500 रुपये
15.	श्री दर्शन लाल अग्रवाल, साऊथ अनारकली, दिल्ली	251 रुपये
16.	श्री नरेश जी, सहारनपुर	251 रुपये
17.	कुमारी सौम्या त्यागी, मोदीनगर	500 रुपये
18.	श्री सुरेन्द्र पाल त्यागी, रेवला मुजफ्फरनगर	200 रुपये
19.	श्री देवशरण त्यागी, दिनकरपुर	100 रुपये
20.	श्री रोहताश आर्य, आर्य समाज, मवाना	51 रुपये
21.	श्री अजय कुमार, बड़ौत	500 रुपये
22.	श्री बलवीर सिंह त्यागी, बरनावा	110 रुपये
23.	श्रीमति बिमला देवी, करनाल	100 रुपये
24.	श्री गौतम त्यागी, कला, सरधना	500 रुपये
25.	श्री राजकिशोर त्यागी, मकनपुर	500 रुपये
26.	श्री जिलेह सिंह, सरधना	51 रुपये
27.	श्री जोगिन्द्र सिंह, जीवाना	100 रुपये

28. श्री वीर सिंह, भामौरी	100 रुपये
29. श्री वीरभद्र सौलंकी, जीवाना	100 रुपये
30. श्री बाबू, गलहैता	11 रुपये
31. श्री अमरीश त्यागी, तलहटा	100 रुपये
32. श्री राजेश्वर त्यागी, पिलाना	100 रुपये
33. श्री अशोक कुमार, बुढ़ाना	251 रुपये
34. श्री हरलाल सिंह, ग्राम मान्डी, मुजफ्फरनगर	100 रुपये
35. श्री सोनू राठी, सैनपुर, मुजफ्फरनगर	500 रुपये
36. गुप्त दान	1100 रुपये
37. श्री राजेश्वर त्यागी, राजेन्द्र नगर, साहिबाबाद	250 रुपये
38. श्री अनिल त्यागी, रासना	250 रुपये
39. श्री अर्जुन सैनी पुत्र श्री अरविन्द शास्त्री, कमालपुर, मेरठ	501 रुपये
40. मास्टर शिवराज और दुष्यन्त त्यागी, दिनकरपुर	250 रुपये
41. श्री लखन, काकड़ा	50 रुपये
42. श्री कमल सिंह, मोदीनगर	101 रुपये
43. श्री मूलचन्द, सुराना	500 रुपये
44. श्री गमदूर सिंह रूपराय, हापुड़ रोड़, मेरठ	151 रुपये
45. श्री राकेश सैनी, काकड़ा, मुजफ्फरनगर	500 रुपये
46. श्री समरपाल सैनी, काकड़ा, मुजफ्फरनगर	150 रुपये
47. श्री धर्मवीर, काकड़ा, मुजफ्फरनगर	100 रुपये
48. श्री अनिल विरीश त्यागी, साहिबाबाद, उ.प्र.	1100 रुपये
49. श्री राजपाल सैनी, शाहपुर	100 रुपये
50. श्री यादराम पुत्र श्री बलजीत, सरधना, मेरठ	100 रुपये
51. स्व. श्रीमति संतोष चढ्ढ़ा, चड़ीगढ़	250 रुपये
52. श्री एस. आर. सैनभी, चड़ीगढ़	250 रुपये
53. श्रीमति सीमा त्यागी, स्याना, बुलन्दशहर	1100 रुपये
54. श्रीमति सुधा त्यागी, मेरठ	500 रुपये
55. श्री शुभम मलिक, फागुना	100 रुपये
56. श्री शिवम मलिक, फागुना	100 रुपये
57. श्री ब्रह्म सिंह, काकरा मुजफ्फरनगर	100 रुपये
58. श्रीमति एम. टी. रत्ना, डब्ल्यू.ई.ए. एरिया, नई दिल्ली	1000 रुपये

59. श्रीमति कमला देवी देशवाल, राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली	1000 रुपये
60. श्री अरविन्द कुमार पुत्र श्री स्व. श्री ब्रजवीर सिंह, मेरठ	501 रुपये
61. गुप्त दान	51 रुपये
62. श्री कन्हैया लाल त्यागी, सरधना, मेरठ	100 रुपये
63. श्रीमति सविता, चमरावल	51 रुपये
64. श्री राजपाल वानप्रस्थी, भामौरी, सरधना, मेरठ	100 रुपये
65. मास्टर हिमानिश त्यागी, माचरा, मेरठ	101 रुपये
66. श्री राजेन्द्र प्रसाद शर्मा, गांव मीरजापुर, पो. रसना, मेरठ	500 रुपये
67. श्रीमति प्रभा, किराना	50 रुपये
68. श्री हिमानिश त्यागी, पुत्रश्री रोहित त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी, गांव माजरा	1101 रुपये

सभी उपरोक्त दान दाताओं का समिति हृदय से आभार प्रकट करती है और उनको परिवार सहित जीवन में सुख, शान्ति व सर्वतोन्मुखी समृद्धि के लिए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है।

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)

मासिक सहयोग

श्री हरीराम गुप्ता, केसर स्टील, वजीरपुर, दिल्ली	1000 रुपये
श्री चिंतामणि त्यागी एवं श्री जगमोहन त्यागी बरला, मुजफ्फरनगर	1000 रुपये
श्री संजीव त्यागी (दिनकरपुर) फरीदाबाद, हरियाणा	1000 रुपये
श्री अरुण त्यागी, राजनगर, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	500 रुपये
श्री विनोद त्यागी सुपुत्र श्री जयप्रकाश त्यागी मकनपुर, गाजियाबाद	500 रुपये
मा. कार्तिक त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	251 रुपये
मा. लोमश त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	251 रुपये
डॉ. शुचि, डॉ. राजीव चावला, आणद, गुजरात	250 रुपये
श्री राकेश शर्मा, विराट नगर, पानीपत, हरियाणा	250 रुपये
श्री कृष्ण लाल बत्रा, इन्द्री, जिला करनाल	201 रुपये
मास्टर कवन्धि, रामप्रस्थ, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	101 रुपये
मास्टर सिद्धार्थ, अँकुर अपार्टमैन्ट, दिल्ली	101 रुपये
मास्टर अभ्युदय त्यागी, न्यू जर्सी, अमेरिका	101 रुपये

यौगिक प्रवचन के स्वामित्व व अन्य विवरण का ब्यौरा फार्म नं. 4 (नियम नं. 8)

1.	प्रकाशन स्थान	: दिल्ली
2.	प्रकाशन अवधि	: मासिक
3.	मुद्रक	: डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश
	नागरिकता	: भारतीय
	मुद्रक का पता	: ए-59, पञ्चशील एन्कलेव, नई दिल्ली-110017
4.	प्रकाशक	: डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश
	नागरिकता	: भारतीय
	प्रकाशक का पता	: ए-59, पञ्चशील एन्कलेव, नई दिल्ली-110017
5.	सम्पादक का नाम	: डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश
	नागरिकता	: भारतीय
	सम्पादक का पता	: ए-59, पञ्चशील एन्कलेव, नई दिल्ली-110017
6.	उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा समस्त पूँजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों।	: वैदिक अनुसंधान समिति (पञ्जी.)

मैं डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश
प्रकाशक के हस्ताक्षर

वैदिक अनुसंधान समिति (पञ्जी.)
सी-38, शिवालिक, मालवीय नगर, नई दिल्ली-110017

।। ओ३म् ।।

जन्मदिन की शुभकामनाएँ

मास्टर ऋत्विक

श्रीमति ब्रजबाला धर्मपत्नि श्री राजकिशोर त्यागी निवासी ग्राम मकनपुर, जिला गाजियाबाद, उ.प्र. ने अपने प्रिय पौत्र ऋत्विक सुपुत्र श्रीमति अञ्जली एवम् श्री हरिओम त्यागी के जन्मदिवस की शुभ बेला के आगमन पर प्रति वर्ष की भाँति इस वर्ष भी 1100 रु. का सात्विक सहयोग समिति के प्रकाशन के कार्य के लिए प्रदान किया है। त्यागी जी का परिवार पूज्यपाद-गुरुदेव के प्रति अत्यन्त आस्था एवम् श्रद्धा रखता है और उनके प्रवचनों का निरन्तर अध्ययन करते हुए और नित्य दैनिक अग्निहोत्र का अनुष्ठान करते हुए अपने परिवार एवम् सम्बन्धियों को ऊर्ध्व गति में ले जाने में निरन्तर प्रयत्नशील है।

इस परिवार से समिति को व श्री गांधी धाम समिति लाक्षागृह बरनावा को निरन्तर सहयोग प्राप्त होता रहता है जिसके लिए समिति हृदय से हार्दिक आभार प्रकट करती है और प्रिय सुपौत्र को जन्म दिवस की बारम्बार शुभकामनाएँ प्रदान करते हुए परिवार के सभी सदस्यों के लिए दीर्घआयु, सुख शान्ति एवम् सर्वतोन्मुखी समृद्धि के लिए परमात्मा से विनय करती है।

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)

योगनिष्ठ पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज (शृङ्गी ऋषि जी) की अमृतवाणी संहिता के रूप में

*1.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 1)	80.00
*2.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 2)	80.00
3.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 3)	60.00
*4.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 4)	80.00
5.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 5)	60.00
6.	Yogic Wisdom of Ancient Rishis	80.00
7.	वेद पारायण-यज्ञ का विधि विधान	25.00
8.	आत्म-लोक	35.00
9.	धर्म का मर्म	40.00
10.	शंका-निवारण	30.00
11.	यज्ञ-प्रसाद अर्थात् यज्ञ का महत्व	40.00
12.	आत्मा व योग-साधना	35.00
*13.	देवपूजा	50.00
14.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 1)	125.00
15.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 2)	125.00
16.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 3)	125.00
17.	रामायण के रहस्य	35.00
18.	यज्ञ एवं औषधि विज्ञान	40.00
19.	महाभारत के रहस्य	30.00
20.	अलङ्कार-व्याख्या	35.00
21.	रावण-इतिहास	50.00
22.	महाराजा-रघु का याग	30.00
23.	वनस्पति से दीर्घ-आयु	35.00
24.	मोक्ष प्राप्ति का मार्ग	35.00
25.	चित्त की वृत्तियों का निरोध	35.00
26.	आत्मा, प्राण और योग	35.00
27.	पञ्च-महायज्ञ	35.00
28.	अश्वमेघ-याग और चन्द्रसूक्त	40.00
29.	याग-मन्जूषा	40.00
30.	आत्म-दर्शन	30.00
31.	पुत्रेष्टि-याग और मातृ-दर्शन	30.00
32.	याग और तपस्या	60.00
33.	यागमयी-साधना	35.00
34.	यागमयी-सृष्टि	35.00
35.	याग-चयन	40.00
36.	दिव्य-रामकथा	120.00
37.	ज्ञान-कर्म-उपासना	35.00
38.	दिव्य-ज्ञान	40.00
*39.	महाभारत एक दिव्य दृष्टि	90.00
40.	महर्षि-विश्वामित्र का धनुर्याग	40.00
41.	आत्म-उत्थान	40.00
42.	तप का महत्व	40.00
43.	अध्यात्मवाद	40.00
44.	ब्रह्मविज्ञान	40.00
45.	वैदिक-प्रभा	35.00
46.	प्रकाश की ओर	35.00
47.	कर्तव्य में राष्ट्र	40.00
48.	वैदिक-विज्ञान	35.00
49.	धर्म से जीवन	35.00
50.	आत्मा का भोजन	40.00
51.	साधना	35.00
52.	त्रेताकालीन-विज्ञान	40.00
53.	यज्ञोमयी-विष्णु	40.00
54.	यौगिक प्रवचन माला भाग-6	80.00
55.	स्वर्ग का मार्ग	40.00
*56.	यौगिक प्रवचन माला भाग-7	80.00
57.	माता मदालसा	50.00
58.	यौगिक प्रवचन माला भाग-8	80.00
59.	यौगिक प्रवचन माला भाग-9	80.00
60.	यौगिक प्रवचन माला भाग-10	80.00
61.	याग एक सर्वाङ्ग पूजा	80.00
62.	यौगिक प्रवचन माला भाग-11	80.00
*63.	यौगिक प्रवचन माला भाग-12	80.00
64.	मानव कल्याण की चर्चाएं	50.00
65.	प्रभु-दर्शन	50.00
*66.	यौगिक प्रवचन माला भाग-13	80.00
67.	समाज उत्थान का मार्ग	50.00
*68.	यौगिक प्रवचन माला भाग-14	80.00
*69.	ब्रह्म की ओर	50.00
70.	ईश्वर मिलन	50.00
71.	यौगिक प्रवचन माला भाग-15	80.00
72.	यौगिक प्रवचन माला भाग-16	80.00

*सहजिल्द का मूल्य 20 रु. अतिरिक्त है।

पुस्तक प्राप्ति के स्थान

योगनिष्ठ पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज की अमृतवाणी का साहित्य सँहिता, कैसेट्स, सी. डी. व डी. वी. डी. के रूप में निम्न स्थानों पर उपलब्ध हैः–

1. श्री महानन्द संस्कृत महाविद्यालय, लाक्षागृह, बरनावा, जिला–बागपत, (उ.प्र.)। मोबाइल नं 09719622950
2. श्री गुरुवचन शास्त्री, मकान नं. 165/30ए, दक्षिण भोपा रोड़, निकट माढ़ी की धर्मशाला, नई मण्डी, मुजफ्फरनगर (उ. प्र.)। मोबाइल नं. 09412888050
3. सुश्री. नीरू अबरोल, के-3 लाजपत नगर-3, नई दिल्ली। दूरभाष नं. 011-41721294
4. डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश, A-59 पंचशील एन्क्लेव नई दिल्ली-110017 दूरभाष नं. 011-41030481
5. श्री जितेन्द्र चौधरी, ए-84, मालवीय नगर, नई दिल्ली-110017, मो. नं. 9811707343
6. श्री अनिल त्यागी, सी-47 रामप्रस्थ, गाजियाबाद (उ.प्र.)। दूरभाष नं. 0120-4165802
7. श्री आशीष त्यागी, डी-293, रामप्रस्थ, पोस्ट ऑफिस चन्द्रनगर, गाजियाबाद पिन कोड-201011 (उ.प्र.)। दूरभाष नं. 0120-2642052
8. श्री लोमश त्यागी, 106/4 पंचशील कालोनी गढ़ रोड़, मेरठ, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09410452076
9. श्री विवेक त्यागी, 16ए, अशोक कॉलोनी, अल्कापुरी, हापुड़, (उ.प्र.)। दूरभाष नं. 0122-2316196
10. श्री संजीव त्यागी, 1107, सैक्टर-3, बल्लभगढ़, फरीदाबाद हरियाणा। मोबाइल नं. 09910589486
11. मैं. हर्ष मेडिकोज, ए-2/31, सैक्टर-110–मार्किट नोएडा, फेस-2, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 9899228860, 9871367937
12. पवन त्यागी सुपुत्र श्री राजाराम त्यागी, मौ. खड़खड़ियान, माता, ग्राम खरखौदा, जिला मेरठ (उ.प्र.) मोबाइल नं. 7536097171
13. श्रीमती बाला, 251, दिल्ली गेट, नई दिल्ली। दूरभाष नं. 011-23282088
14. डॉ. अशोक कुमार आर्य, आर्यावर्त कालोनी निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा, जिला-जे.पी. नगर (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09412139333
15. श्री सुमन कुमार शर्मा, जे-380, सैक्टर बीटा-2, ग्रेटर नोएडा, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09313530505
16. श्री सतीश भारद्वाज, ग्राम बहेडी, रोहाना मिल, जिला मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)।
17. मैं. विजय कुमार, गोविन्द राम हासानन्द, 4408, नई सड़क, दिल्ली। दूरभाष नं. 011-23977216

योगमुद्रा में प्रवचन करते हुए पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज

उद्‌बोधन

हमें विचारना है कि हम सर्वत्र प्रभु को दृष्टिपात् करें, कण-कण में जब हम प्रभु को दृष्टिपात् करते हैं तो मानव पाप-कर्म नहीं करता। मानव पाप-कर्म उस काल में करता है जब परमात्मा को अपने से दूर कर देता है और दूर क्यों कर देता है? केवल अज्ञानता के वश क्योंकि वह प्रभु को जानता नहीं। जो मानव प्रभु को जानता है वह पाप नहीं करता, पाप वही मानव किया करता है जो प्रभु से दूर हो जाता है। जो प्रभु को कण-कण में, मनों में, चक्षुओं में, श्रोतों में, प्रत्येक इन्द्रिय में प्रभु की प्रतिभा स्वीकार करता है। जिसने जो वस्तु बनाई है उसमें वह रमण भी कर रहा है और जब मानव को यह निश्चय हो जाता है कि वहाँ मानव पाप नहीं करता।

पूज्यपाद-गुरुदेव